International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 27-11-2025; Accepted: 23-01-2026; Published: 09-02-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 95-97

भारतीय दर्शन का स्वरूप और उसकी विभिन्न प्रणालियाँ

सुशील विठठल भोंग
सहायक प्रोफेसर, प्रतिभा शिक्षणशास्त्र महाविदयालय चिंचवड, पुणे, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
आधुनिक युग में प्राचीन भारतीय दर्शन का अनन्यसाधारण महत्त्व है। भारतीय दर्शन का प्रतिबिंब भारत की नई शिक्षा नीति NEP 2020 में भी दिखाई देता है। इसी बात को ध्यान में रखकर इस अभ्यास के अंतर्गत भारतीय दर्शन का स्वरूप, विषय वस्तु, शाखाएँ, विधियाँ इनका संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत लेख में किया गया है।

मूल शब्दः दर्शन का स्वरूप, विषय वस्तु, शाखाएँ, प्रणालियाँ

मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी है, चिंतन करना मानव का स्वभाव है। प्राचीन काल से लेकर आज तक मानव अपनी चिंतन प्रक्रिया के व्दारा ही अपना लक्ष्य निर्धारित करता रहा, उसे पाने का अथक प्रयास करता रहा। प्राचीन काल का मानव तो पूरी तरह से प्रकृति के अधिन था। वह इतना ही समझता था कि ये घटनाएँ घटित हो रही हैं, क्यों हो रही है? कैसे घटीत हो रही है? उसकी चिंतन शक्ति का विकास पूर्णतया नहीं हुआ था। वह समस्या के समाधान का तथा ज्ञान विज्ञान को लौकिक जगत से अलौकिक जगत तक जाना चाह रहा था। वह मनुष्य की समस्याओं का समूल निराकरण चाहता है और उस निराकरण के साथ स्थायी समाधान भी चाहता है। विविध समस्याओं के समाधानार्थ मानव अपनी चिंतन प्रक्रिया विभिन्न श्रेत्रों में विभिन्न रूपों में करता है। दर्शनशास्त्र में मनुष्य मानवी समस्याओं के समाधानार्थ एक निश्चित दिशा से बौध्दिक प्रयत्न करता है और विश्व की संपूर्णता, जीवन के सत्यता की खोज कराता है। प्राचीन भारतीय दर्शन आज के तकनिकी युग में भी अति आवश्यक है। क्योंकि यह नीति भारत की समृद्ध दार्शनिक और सांस्कृतिक परंपरा को पुनर्जीवित करती है। भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति NEP 2020 और दर्शनशास्त्र के बीच एक महत्त्वपूर्ण संबंध है। इसी बात को ध्यान में लेते हुए, प्रस्तुत लेख में भारतीय दर्शन के बारें में विवेचन किया हैं।

उद्देश्य

1 भारतीय दर्शन का स्वरूप समझना।
2 भारतीय दर्शन की विषय वस्तू समझना।
3 भारतीय दर्शन की शाखाओं के नाम समझना।
4 भारतीय दर्शन की विभिन्न विधाओं को समझना।

भारतीय विचारधारा में दर्शन का स्वरूप

दर्शन धातू की उत्पत्ति 'दृश' धातु से बना हुआ मानते थे, जिसका अर्थ 'देखना' अर्थात साक्षात ज्ञान प्राप्त करना ही दर्शन है। यह साक्षात परम सत् का साक्षात ज्ञान है।

एक अन्य व्याख्या के अनुसार 'दृश्यते अनेन इति दर्शनम्' अर्थात जिसके व्दारा देखा जाय, यानि जिसके द्वारा साक्षात परम सत् का ज्ञान प्राप्त किया जाय वही दर्शन हैं। अर्थात दर्शन के द्वारा ही परम सत् का साक्षात्कार किया जाता हैं। विद्वान व्यक्तियों द्वारा परम सत् को ढूँढना या उसकी अनुभूतियोंको प्राप्त करना ही दर्शन का उद्देश्य है। अनुभूतियाँ दो प्रकार की होती है ऐंद्रिय (Sensuous) और अनैन्द्रिय (Non-Sensuous)। अनैन्द्रिय अनुभूति ही आध्यात्मिक अनुभूति होती है। इस आध्यात्मिक अनुभूति की अवस्था तक पहुँचने के लिए मानव को साधना की आवश्यकता पडती है। आध्यात्मिक अनुभवकर्ता ही आध्यात्मिक अनुभूति रखता है जिस साधक ने अनुभूति प्राप्त की है, वह अन्य साधकों तक इस प्रकार की अनुभूति पहुँचाने का प्रयास करता है। इस कार्य को सफल बनाने में मानव की बुद्धि सहायता करती है। मानव बुद्धि के द्वारा ही अपनी विविध प्रकार की शंकाओं को दूर करते हुए इस आध्यात्मिक अनुभूति की ओर निःसन्देह रूप में उत्मुख होता है। अतः इस स्थल पर दोनों ही आवश्यक दीख पडते है अनुभूति भी और उसकी बौद्धिक व्याख्या भी।

भारतीय दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा का एक महत्त्वपूर्ण और गहन भाग है। यह दर्शन जीवन, आत्मा, ब्रम्हांड, मोक्ष, नैतिकता और ज्ञान की प्रकृति को समझने का प्रयास करता है। इसे मुख्यतः दो भागों में बाँटा गया है एक आस्तिक दर्शन और दूसरा नास्तिक दर्शन।

आस्तिक दर्शन वेदों को प्रमाण मानते हैं। उसके अंतर्गत न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा, वेदांत दर्शन (उत्तर मीमांसा– अद्वैत वेदांत, विशिष्टाद्वैत, द्वैत वेदांत).

नास्तिक दर्शन वेदों को प्रमाण नहीं मानते हैं। उसके अंतर्गत बौद्ध, जैन, चार्वाक दर्शन आते हैं।

दर्शन की विषय वस्तु इस प्रकार है

1. **तत्वमीमांसीय समस्याएँ:** तत्वमीमांसीय समस्याओं के अंतर्गत जगत् में तत्वों की संख्या और उसके स्वरूप पर विचार करना व विभिन्न प्रकार के तत्त्वमीमांसीय सिद्धांतों का विवेचन करना है।
2. **विश्व संबंधी समस्याएँ:** विश्व की उत्पत्ति के संदर्भ में सृष्टिवाद तथा विकासवाद दोनों ही सिद्धांतों की समुचित व्याख्या प्रस्तुत करना विश्व मीमांसा का उद्देश्य है।
3. **ईश्वर संबंधी समस्याएँ:** इसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार के ईश्वरीय सिद्धांतों की व्याख्या व समीक्षा प्रस्तुत की जाती है।
4. कारणता सिद्धांत का विश्लेषण करना।
5. **ज्ञानमीमांसीय समस्याएँ:** इसके अंतर्गत ज्ञान का स्वरूप, ज्ञान का साधन, ज्ञान में ज्ञाता तथा ज्ञेय की स्थिति व ज्ञान की प्रामाणिकता संबंधी सिद्धांतों की व्याख्या करना।
6. मानव जीवन के आदर्शों व मूल्यों का विवेचन करना।

दर्शन की कुछ महत्त्वपूर्ण शाखाएँ

दर्शन की विभिन्न प्रणालियाँ (विधियाँ)

दर्शन के इतिहास में विद्वानों ने किसी लक्ष पर जाने के लिए अलग–अलग मार्ग अपनाएँ हैं। अलग–अलग मार्गो पर चलते हुए भी सभी विद्वान अपने लक्षों तक पहुँचने में सफल हुए हैं। विद्वानों की कोई खास प्रणाली नहीं होती है, वह जिस मार्ग से स्वयं चलकर पहुँचता है वह मार्ग उस विद्वान की दार्शनिक प्रणाली होती है।

1. आगमन की विधि The Method of Induction
2. निगमन की विधि The Method of Deduction
3. संपूर्णता की विधि The Method of the Whole
4. अंश की विधि The Method of Part
5. विश्लेषण की विधि The Method of Analysis
6. खंडन की विधि The Method of Refutation
7. मंडन की विधि The Method of Establishment
8. द्वंद्वात्मक प्रणाली The Method of Dialectical

1. **आगमन की विधि The Method of Induction:** इस विधि में दर्शन विशेष–विशेष उदाहरणों के निरीक्षण के पश्चात एक सामान्य सिद्धांत की स्थापना करता है। इस विधि में कारण–कार्य नियम व प्रकृति समरूपता के नियम पर निष्कर्ष करना आवश्यक होता है। उदा स्वरूप–

राम मरणशील है।
श्याम मरणशील है।
लक्ष्मण मरणशील है।

कारण कार्य नियम – मनुष्य और मरणशीलता में कार्य– कारण संबंध है।
प्रकृति समरूपता का नियम – उसी कारण से वही कार्य भविष्य में भी होगा।
कारण कार्य पर निष्कर्ष – सभी मनुष्य मरणशील है।

2. **निगमन की विधि The Method of Deduction:** इस विधि में दर्शन सामान्य वाक्य के आधार पर विशेष वाक्य निर्गमित किए जाते है। अतः निगमन की विधि द्वारा हम सामान्य ज्ञान के आधार पर विशिष्ट ज्ञान को सिद्ध करते है।
उदा स्वरूप – सामान्य वाक्य – सभी मनुष्य मरणशील है।
विशेष वाक्य – राम मरणशील है।
श्याम मरणशील है।

3. **संपूर्णता की विधि The Method of the Whole:** इस विधि में दर्शन समस्त अनुभवों एवं अनुभूतियों की उनकी समग्रता में अध्ययन करता हैं। समग्रता की व्याख्या में एक दार्शनिक अपने अनुभव की सारी विविधताओं को एक सूत्र में बाँधकर उसे समग्र बनाने की चेष्टा करता है।

4. **अंश की विधि The Method of Part:** इस दर्शन में विद्वान समस्याओं का समाधान उसके विशिष्ट संदर्भ को समझकर अंशः ताहा करता है। अंशःताहा समस्या को लेने से उसका समाधान करने में भी सुविधा होती है। अतः कुछ विद्वान समस्याओं के सूक्ष्म जानकारी हेतु अंश की विधि पर ज्यादा बल देते है।

5. **विश्लेषण की विधि The Method of Analysis:** दर्शन के लिए विश्लेषण की विधि अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इस विधि के द्वारा कोई भी सिद्धांत एक सुसम्मत सिद्धांत बनकर सामने आ सकता है। यह विधि आरोप–प्रत्यारोप, आलोचनात्मक प्रक्रिया से गुजरती है। विभिन्न प्रकार के तर्क–वितर्क आदि के द्वारा विश्लेषण संपन्न किया जाता है।

6. **खंडन की विधि The Method of Refutation:** इस दर्शन में विद्वान अपने विचारों को स्थापित करने के पूर्व उससे संबंधित पूर्व के विचारों का खंडन करना आवश्यक समझते हैं। बहुत से विद्वान अपने विचारों का प्रारंभ खंडन से शरू करते है, ताकि विचार सुसम्मत, तर्कसंगत, और प्रामाणिक हो।

7. **मंडन की विधि The Method of Establishment:** यह विधि किसी भी सिद्धांत या विचार को सुसम्मत स्थापित करने की विधि है। किसी उपाय से दर्शन के आधारभूत सिद्धांतो का अन्वेषण किया जाए और उसे स्थापित किया जाए यह एक समस्या है और यही मंडन की विधि है, जिसके द्वारा किसी भी विचार को स्थापित किया जाता है।

8. **द्वंद्वात्मक प्रणाली The Method of Dialectical:** इस प्रकार की विधि में प्रक्रिया पक्ष, प्रतिपक्ष, और संपक्ष के रूप में चलता रहता है। विचार के क्षेत्र में इस प्रक्रिया का अर्थ होता है– दो विरोधी विचारों के व्दंद से तीसरे पर पहुँचना। इस प्रकार जहाँ परस्पर विरोधी विचारों से तीसरे विचार अथवा निर्णय पर पहुँचते हैं, उसे ही व्दंव्दात्मक विचार प्रणाली कहा जाता है।

निष्कर्ष

वस्तुतः आज दर्शन की आवश्यकता अन्य युगों से कहीं अधिक है। आज का युग घोर संकट का युग है। जीवन के आदर्शो, जीवन के मूल्यों के संदर्भ में आज हम अनिश्चितता की स्थिति में जी रहे हैं। अतः आज हमें एक समग्र सशक्त जीवन दर्शन की आवश्यकता है जो कि मानव का पथ–प्रदर्शक के रूप में कार्य करें, तभी मानव जीवन पूर्ण रूपेण, संतोष प्राप्त कर सकता है। इसिलिए प्राचीन भारतीय दर्शन को समझना अध्यापकों के लिए आवश्यक है। ताकि वह आनेवाली नई पीढी को प्राचीन भारतीय विचारों, जीवन मूल्यों, परंपराओं से परिचित कराएँ। इसलिए अध्यापकों को दर्शन की विषय वस्तुएँ, शाखाएँ, विधियाँ समझना आवश्यक है। दर्शन की विविध शाखाओं में गुरू अपने शिष्यों को ज्ञानदान कैसे करते थे। उनकी मार्गदर्शन की विधियाँ कौन कौन सी है, आदि महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत लेख के माध्यम से उपयुक्त है।

संदर्भ

1 डॉ. द्विवेदी, ज्ञा. (प्रथम संस्करण 2007) तत्वमीमांसीय और ज्ञानमीमांसीय समस्याएँ समग्र एवं वस्तुनिष्ठ, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली 15.

2 पांडेय राजकुमार. (2013), भारतीय दर्शन की प्रमुख प्रणालियाँ

3 तिवारी, लक्ष्मीनारायण. (2014) भारतीय दर्शन के षड्दर्शन, वाराणसीः चौखम्बा प्रकाशन

4 Gara Latchanna, Kadem Srinivas, Rashmi Srivastava, (First Edition 2016) Philosophical Foundations of Education, Neelkamal Publication, Hyderabad.

5 https://hi.wikipedia.org/wikiदर्शनशास्त्र#दार्शनिक पद्धति